राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

1. **अखिल भारतीय बाघ आकलन-2022 के फेस-3 अंतर्गत कैमरा ट्रैप संबंधी प्रशिक्षण कार्यशाला**

अखिल भारतीय बाघ आकलन चार वर्ष के अंतराल मे पूरे भारत के कुल 18 टाईगर बेयरिग राज्यों में भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार द्वारा क्रियान्वित किया जाता है जो इस बार अपने पांचवे चरण में पदार्पण कर रहा हैं। इस आंकलन के लिये विगत चरण की भांति इस चरण में भी राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा तकनीकी रूप में मध्य प्रदेश वन विभाग के क्षेत्रीय अमले को मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

अखिल भारतीय बाघ आंकलन-2022 के अंतर्गत प्रदेश में बाघों के आंकलन हेतु दिनांक 21-22 एवं 23-24 अक्टूबर 2021 को राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में प्रदेश के बाघ बहुल क्षेत्रीय वनमण्डलों के 59 मास्टर ट्रेनरों को अखिल भारतीय बाघ आंकलन-2022 के फेस-3 के कैमरा ट्रैप के उपयोग संबधी प्रशिक्षण कार्यशाला प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी), भोपाल, मध्यप्रदेश के निर्देशन में श्री अमिताभ अग्निहोत्री, संचालक राज्य वन अनुसंधान संस्थान की अध्यक्षता में संस्थान के सभागृह में सम्पन्न हुआ। कार्यशाला को दो चरणां में आयोजित किया गया। कार्यशाला में संस्थान के वन्यप्राणी प्रभाग के विशेषज्ञ डॉ. अनिरूद्ध मजूमदार, डॉ. अंजना राजपूत, डॉ. मयंक मकरंद वर्मा द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर संस्थान के उप संचालक श्री अमित सिंह चौहान, श्रीमति ऋचा सेठ, श्री राकेश जैन, श्री प्रशांत कोरी एवं श्री अशद हुसैन मंसूरी एवं अन्य सहयोगी दल उपस्थित रहे।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में अखिल भारतीय बाघ आंकलन-2022 की प्रषिक्षण कार्यषाला

2. ग्राम जयराम टोला वारासिवनी जिला बालाघाट में लाख व्यापारियों, कृषकों व वन समिति सदस्यों के साथ परिचर्चा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्तर्गत भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोद संस्थान रांची (झारखण्ड) से वित्त पोषित एवं राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में संचालित लाख कीट की अनुवांशिकी संसाधनां के संरक्षण पर नेटवर्क परियोजना पर शोधकार्य हेतु दिनांक 26 नवम्बर 2021 को लाख प्रसंस्करण केन्द्र जयराम टोला जिला बालाघाट में लाख व्यापारियां, लाख कृषकों एवं वन समिति सदस्यां के बीच एक दिवसीय परिचर्चा का आयोजन किया गया।

जिसमें संस्थान के संचालक श्री अमिताभ अग्निहोत्री एवं मुख्य परियोजना अन्वेषक एवं वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार एवं परियोजना शोधार्थी श्री बलराम लोधी एवं श्री भारत आर्मो उपस्थित रहे। जयराम टोला के लाख प्रसंस्करण केन्द्र के मालिक एम.एल. पारधी, बालाघाट दक्षिण सामान्य वन मंडल के वनमंडलाधिकारी एवं उपवनमंडलाधिकारी श्री अमित पतौडी एवं कृषि विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे, उक्त परिचर्चा में बालाघाट के विभिन्न समिति सदस्य भी उपस्थित रहे संस्थान द्वारा लाख कृषकों को लाख की वैज्ञानिक पद्धति से लाख उत्पादन हेतु सुझाव दिया गया। इस परिचर्चा में प्रगतिशील लाख कृषकां एवं वन समिति के सदस्यां द्वारा वारासिवनी क्षेत्र पलाश वृक्ष बहुल क्षेत्र एवं लाख उत्पादन हेतु अपार सम्भावना हैए की जानकारी दी गई परन्तु तकनीकी अज्ञानता के कारण इस क्षेत्र में लाख का उत्पादन कम हो रहा है। इस क्षेत्र मे तकनीकी प्रशिक्षण कार्यशालाआं की अत्यधिक आवश्यकता है जिससे कृषक लाख उत्पादन कर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकता है। संचालक राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर द्वारा प्रदेश में उन्नत लाख उत्पादन हेतु संस्थान द्वारा सभी कृषकों का कौशल विकास करने का प्रयास किया जावेगा।

लाख व्यापारियों, कृषकों व वन समिति सदस्यों के साथ परिचर्चा

3. **मध्यप्रदेश में सबसे अच्छे प्रदर्शन करने वाली बांस प्रजातियां (best performing bamboo species) की पहचान कर कृषकों की आय में वृद्धि हेतु अध्ययन**

मध्यप्रदेश के 11 विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में बांस की विभिन्न प्रजातियों के उच्च प्रदर्शन बांस की प्रजातियों की पहचान एवं स्थानीय बसोड़ जाति एवं पान की खेती कर रहे कृषको के बांस की आवश्यकता संबंधी, संस्थान की सामाजिक, आर्थिक एवं विपणन शाखा में परियोजना का परिचालन किया जा रहा है, परियोजना का शीर्षक "Identification of best performing Bamboo Species for Enhancement of Income of Farmer in M.P." है उक्त परियोजना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के 11 विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के 15 वनमंण्डलों, अलीराजपुर, नीमच, झाबुआ, उज्जैन, इंदौर, खंडवा, बड़वानी, रायसेन, बैतूल, जबलपुर, अनुपपुर, सिवनी, भिंड, टीकमगढ एवं सतना में स्थापित बांस सेटम्सए कृषकां के बांस प्रदर्शन क्षेत्रों एवं बांस कृषको के बांस रोपित स्थलो का निरीक्षण कर रोपित बांस प्रजातियों के प्रदर्शन संबंधी आंकड़ां के संकलन का कार्य किया जा रहा है। इसके साथ स्थानीय बसोड़ जाति, पान की खेती कर रहे पान कृषकों बांस कारीगरों एवं बांस व्यापारी के सर्वेक्षण कर उनकी बांस प्रजाति की आवश्यकता, उपलब्धता एवं बांस निर्मित सामग्रियों के विक्रय से आय एवं कुल पारिवारिक आय में बांस निर्मित सामग्रियों से प्राप्त होने वाली आय का योगदान आदि के अध्ययन का कार्य किया जा रहा है। संस्थान के आर्थिक - सामाजिक एवं एवं विपणन शाखा द्वारा माह दिसम्बर तक कुल 11 कृषि जलवायु क्षेत्रों की 37 डेमो प्लॉटस, 13 बेम्बू सेटम्स, 20 बांस की खेती करने वाले किसान एवं 1200 बसोड़ परिवार का सर्वेक्षण किया गया है, इस सर्वेक्षण के माध्यम से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली बासों की प्रजातियों को चिन्हित किया जायेगा ताकि प्रदेश में बांसों की उत्पादकता में बढोत्तरी हो एवं प्रदेश सरकार द्वारा निश्चित मापदंडो के आधार पर बांसों की उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सके। संचालक श्री अमिताभ अग्निहोत्री के मार्गदर्शन से वैज्ञानिक एवं परियोजना मुख्य अन्वेषक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार के साथ क्षेत्रीय कार्य हेतु श्री इमरत सेन, श्री विजय बहादुर सिंह, श्री राजेश बर्मन, श्री अरविन्द यादव एवं श्री बलराम लोधी द्वारा सम्पादित किया जा रहा है।

क्षेत्रीय कार्य के दौरान आंकड़ों का संकलन

4. **बीज प्रक्षेत्र का चयन**, **बीज उत्पादन क्षेत्रों की स्थापना**, **प्रबंधन**, **बीज तकनीक एवं नर्सरी प्रबंधन पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम**

माह सितंबर में तीन दिवसीय **05** प्रशिक्षण कार्यक्रम (दिनांक 04.10.2021 से 06.10.2021, 16.11.2021 से 18.11.2021, 24.11.2021 से 26.11.2021, 01.12.2021 से 03.12.2021 एवं 22.12.2021 से 24.12.2021) का आयोजन किया गया, जिसमें अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त झाबुआ, खण्डवा, रतलाम, रीवा एवं ग्वालियर के साथ-साथ सामान्य वनमण्डल, देवास, नीमच, धार, झाबुआ, नरसिंहपुर, उमरिया, उत्तर शहडोल, दक्षिण शहडोल, मंदसौर, उज्जैन, रतलाम, खण्डवा, विदिशा, राजगढ़, रीवा, उत्तर पन्ना, दक्षिण पन्ना, टीकमगढ, पूर्व सीधी, पश्चिम सीधी, भिण्ड, दतिया, श्योपुर, मुरैना, दमोह, छतरपुर, सतना से क्षेत्रीय स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारियों को परियोजना निर्माण से लेकर बीज प्रक्षेत्र का चयन, बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना एवं प्रबंधन, बीज संग्रहण, बीज की गुणवत्ता, परिपक्वता, भण्डारण, उपचारण एवं पौध तैयारी हेतु बीज की मात्रा का आंकलन, रोपणी तकनीक एवं प्रबंधन, केंचुआ खाद निर्माण एवं उपयोग पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन का कार्य किया गया। उक्त प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन में पांच चरणों में संपादित किया गया, जिसमें कुल **138** क्षेत्रीय स्तर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन के विषय वस्तु निम्नानुसार रहे।

संचालक द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत व्याख्यान	प्रशिक्षण के विभिन्न बिन्दुओं पर डॉ. अर्चना शर्मा, वरि. वैज्ञानिक द्वारा व्याख्यान
बीज प्रयोगशाला में बीज की गुणवत्ता के परीक्षण का प्रदर्शन	बीज उत्पादन क्षेत्र बनाने हेतु स्थल चयन बाबत् बीज उत्पादन क्षेत्र का भ्रमण

5. **बीजा (टेरोकारपस मारसुपियम) के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनुसंधान**

बीजा महत्वपूर्ण काष्ठ उत्पादक वृक्ष प्रजाति होने के साथ-साथ बहुत ही महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष प्रजाति भी है जिसका उपयोग मधुमेह रोग को नियंत्रित करने के लिये किया जाता है। बीजा मध्यप्रदेश के प्रायः सभी वन क्षेत्रों में पाया जाता है। काष्ठ एवं औषधीय गुणों के कारण बीजा का उपयोग बहुतायत में होने के कारण यह प्रजाति दिनों-दिन वनों से कम होती जा रही है एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आई.यू.सी.एन.) के अनुसार वर्तमान में यह प्रजाति विलुप्त प्रायः स्थिति में है। आज इसके संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता है जिससे इस प्रजाति को भविष्य में संरक्षित किया जा सके। संस्थान की अनुवांशिकीए वृक्ष सुधार एवं जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग द्वारा इस प्रजाति के स्वस्थ्य एवं उन्नत वृक्षों (केन्डिडेट धन वृक्षों) का चयन प्रदेश के विभिन्न वन मण्डलों में किया जा रहा है एवं लगभग 208 वृक्षों के सर्वेक्षण उपरांत 88 उच्च गुणवत्ता वाले केन्डिडेट धन वृक्षों का चयन किया जा चुका है इसके साथ ही इस प्रजाति के संवर्धन हेतु क्लोनल प्रोपेगेशन की तकनीक विकसित करने हेतु अनुसंधान कार्य किये जा रहे हैं जिससे लुप्त प्रायः हो रही इस प्रजाति के संरक्षण एवं संवर्धन किया जा सके।

बीजा (टेरोकारपस मारसुपियम) के चयनित केन्डिडेट धन वृक्ष

6. मध्यप्रदेश के सागर जिला में स्थित नौरादेही वन्यप्राणी अभ्यारण्य में कोपरा मध्यम सिंचाई परियोजना से अभ्यारण्य में पाई जाने वाली वन्यप्राणियों एवं वनस्पतियों में पड़ने वाली पर्यायवरणीय प्रभाव का मूल्यांकन

सिंचाई परियोजना के अन्तर्गत बांध का निर्माण कोपरा नदी के ऊपर बनाया जाना हैए जो बागसपुरा गाँव, रेहली तहसीलए जिला सागर मध्यप्रदेश में स्थित है। इस अध्ययन में वर्तमान में उपलब्ध अभ्यारण्य में पाये जाने वाले वन्यप्राणियों एवं वनस्पतियों के आंकड़ों का संग्रहण तथा क्षेत्र में आजीविका के साधनों की जानकारी एकत्र करना, बांध के निर्माण से 10 किमी. के क्षेत्र में वन्यप्राणियों एवं वनस्पतियों में पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन, ध्वनि, वायु एवं जल प्रदूषण का अध्ययन एवं पर्यायवरणीय प्रबंध योजना तैयार की जावेगी।

नौरादेही वन्यप्राणी अभ्यारण्य में परियोजना क्षेत्र के अन्तर्गत संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा प्रारंभिक सर्वेक्षण

7. पार्वती नदी पर इन्टेक वेल एवं एनीकट के निर्माण से जलीय जीवों पर होने वाले सम्भावित प्रभावों का अध्ययन

मध्यप्रदेश अबर्न डेव्लहपमेंट कम्पनी द्वारा वित्त पोषित परियोजना "Impact Assessment of Proposed Sheopur Kalan & Badoda Towns a Group Water Supply Scheme-Parbati River Sub-project under MPUSIP on Aquatic Fauna, River Hydrology & Ecology and its Mitigation" के अंतर्गत श्योपुर कलां व बड़ौदा टाउन के लिये जल आवर्धन योजना के तहत् पार्वती नदी से पेय जल पाइप लाइन के द्वारा लाया जाना है। इन्टेक वेल एवं एनीकट का निर्माण बड़ौड़िया भिण्डी ग्राम के निकट पार्वती नदी पर होना प्रस्तावित है। चूंकि पार्वती नदी चम्बल नदी की प्रमुख सहायक नदी है इसलिए इसका महत्व अधिक है। पार्वती नदी में घड़ियालों, दुलर्भ प्रजातियों एवं प्रवासी पक्षियों का भी निवास स्थान है। अध्ययन क्षेत्र का कुछ भाग इको सेंसिटिव जोन राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण में आता है, इसलिए इन जलीय जीव-जन्तुओं का जल निकासी से होने वाले प्रभावों का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। पार्वती नदी के पारिस्थितिकी का प्रभाव प्रमुख रूप से राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण पर भी पड़ेगा। जल निकासी से चम्बल नदी तथा सहायक पार्वती नदी के जलीय जीव जन्तुओं पर जल आपूर्ति में संतुलन बना रहे, अनुसंधान में इस बात पर विशेष ध्यान रखा जायेगा। परियोजना का अनुसंधान कार्य दिसम्बर 2021 में प्रारंभ किया गया है जिसमें जल की गुणवत्ता, बहाव की गति, जलस्तर, तलहटी की स्थिति, चौड़ाई, गहराई, जलीय जीव जन्तुओं की स्थिति का आंकलन आदि के आंकड़े अध्ययन क्षेत्र से लिये जा रहे है, जिससे पार्वती नदी का पारिस्थितिकी संतुलन भी बना रहें एवं इन्टेक वेल से होने वाले नकारात्मक प्रभाव को दूर किया जा सके। यह अनुसंधान कार्य राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की वन्यप्राणी शाखा के द्वारा किया जा रहा है, जिनमें मुख्य अन्वेषक के रूप में डॉ अंजना राजपूत तथा परियोजना अनुसंधान दल के रूप में श्री शैलेन्द्र सिंह यादव, श्री सुभांजन घटक, श्री मनीष राज, दीपक कुमार सिंह, मो. अशद हुसैन मंसूरी तथा श्री प्रताप राव वाघ कार्य कर रहे हैं।

श्योपुर कलान में परियोजना क्षेत्र में संस्थान के विषय विशेषज्ञों द्वारा सर्वेक्षण

8. खण्डवा (सामान्य) वनमंडल के प्रस्तावित तितली पार्क संबंधित क्षेत्रों की स्थल उपयुक्तता हेतु सर्वेक्षण कार्य

खण्डवा (सामान्य) वनमंडल वन परिक्षेत्र सिंगाजी के चारखेड़ा बीट के कक्ष क्रमांक 468 में एक तितली पार्क कि स्थापना कि जानी है। स्थल के चयन एवं निरीक्षण हेतु वनमण्डलाधिकारी खण्डवा (सामान्य) वनमंडल द्वारा राज्य वन अनुसंधान संस्थानए जबलपुर से सम्पर्क किया गया। संस्थान के जैवविविधता शाखा से डॉ. उदय होमकरए वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी द्वारा वनमंडल के प्रस्तावित तितली पार्क संबंधित क्षेत्र एवं आसपास के क्षेत्रों का निरिक्षण दिनांक 9/12/21 को क्षेत्रीय अधिकारियों एवं क्षेत्रीय अमला के साथ किया गया एवं उनसे संबंधित विषय पर चर्चा की गई। खण्डवा (सामान्य) वनमंडल के प्रस्तावित तितली पार्क संबंधित क्षेत्रों की स्थल उपयुक्तता का परिक्षण कर प्रतिवेदन वनमण्डाधिकारी खण्डवा (सामान्य) वनमंडल को भेजा गया।

प्रस्तावित क्षेत्र में अधिकारियों से चर्चा एवं संस्थान के विषय विशेषज्ञों द्वारा होस्ट प्लांट का अवलोकन

9. 8वां अंर्तराष्ट्रीय हर्बल मेला भोपाल में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में स्थित क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र द्वारा भागीदारी

मध्य प्रदेश लघु वनोपज (व्यापार और विकास) सहकारी संघ, द्वारा दिनांक **22** से **26** दिसंबर **2021** भोपाल, मध्य प्रदेश में **8** वां अंतर्राष्ट्रीय हर्बल मेला, आयोजित किया गया, जिसमें राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर एंव क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र मध्य क्षेत्र जबलपुर ने भी इस वन मेले में भाग लिया। मेले में अपनी गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हुए एक स्टॉल लगाया गया, जिसमें इस केन्द्र द्वारा मेले में आये लोगों, किसानां तथा विद्यार्थियों को औषधीय पौधे क्षेत्र के विभिन्न हितधारकां को पोस्टर एवं लाइव औषधीय पौधो के प्रदर्शित, प्रकाशन और ब्रोषर के माध्यम से प्रदान की गई सेवाओं को प्रदर्शित किया ।

स्टॉल में माननीय डॉ. कुंवर विजय शाह, वन मंत्री मध्य प्रदेष शासन, श्रीमती करलिन खोंगवार देशमुख, प्रमुख सचिव, आयुष विभाग म.प्र. शासन एवं संचालक राज्य वन अनुसंधान संस्थान, श्री अमिताभ अग्निहोत्री द्वारा भ्रमण किया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयुष आपके द्वार कार्यक्रम के तहत अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला में निःशुल्क औषधीय पौधों के वितरण का कार्यक्रम किया गया, जिसमें लगभग 1000 विभिन्न औषधीय पौधों को वितरण किया गया।